– डॉ. हसन युनुस पठान

तुलनात्मक साहित्य का वर्तमान परिप्रेक्ष्य : एक *

साहित्य का अध्ययन मूलतः ही तुलनात्मक होता है । साहित्य का इतिहास हो अथवा किसी विशिष्ट कृति का अध्ययन, हम उसे तत्कालीन एवं हमारे समकालीन परिवेश से जोड़कर देखते हैं । इतना ही नहीं, साहित्येतिहास का अध्ययन करते समय हम सम्पूर्ण साहित्य की प्रक्रिया में उस विशिष्ट कृति ने क्या विशिष्ट योगदान दिया और इतिहास प्रक्रिया में उसने क्या जोड़ा, इसका भी अध्ययन करते हैं । इस अध्ययन प्रक्रिया में एक कृति की अन्य कृतियों से तुलना करना अनिवार्य–सा हो जाता है । ऐसे में तुलनात्मक साहित्य व्यावहारिक स्तर पर एक साहित्येध्ययन की एक अनिवार्य शर्त है । जिस प्रकार व्यक्ति समाज से कटकर पूर्णत्व नहीं पा सकता उसी प्रकार साहित्य का अध्ययन भी तुलनात्मक हुए बगैर पूर्णत्व नहीं पा सकता है । तुलनात्मकता साहित्य के अध्ययन की व्यावहारिक एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है और जब इसे एक अध्ययन पद्धति के रूप में सप्रयास किया जाता है, तब उसके लिए सम्पूर्ण सैद्धान्तिकी की आवश्यकता महसूस होती है, जो आज विश्व स्तर पर अपने विकसित रूप में उपस्थित है । ऐसी सैद्धान्तिकी विश्व की तमाम भाषाओं के साथ ही स्थानीय भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के दौरान आनेवाली कठिनाइयों को दूर करते हुए विकसित करने का लगातार प्रयास किया जा रहा है, इस कारण उसका सदा विकासशील होना अनिवार्य है । प्रस्तुत लेख में तुलनात्मक साहित्य की सैद्धान्तिकी के सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है, जिसमें इसकी व्याख्या, अर्थ, विभिन्न विद्वानों द्वारा समय–समय पर की गई इसकी परिभाषाएँ, इसका स्वरूप, विकास एवं तुलनात्मक साहित्य की सैद्धान्तिकी की आवश्यकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । इस प्रकार के अध्ययन में आनेवाली सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक समस्याओं को समय–समय पर विद्वानों द्वारा सुलझाने का प्रयास किये गए हैं, किन्तु इसके साथ की कई अन्य समस्याएँ साहित्य के विकास में असमतोलता आदि कई कारणों से आती रहीं हैं, इन समस्याओं एवं विद्वानों द्वारा दिए गए समाधानों तथा तुलनात्मक साहित्य के सामने नयी उभरती हुई चुनौतियों की चर्चा भी अन्त में की गयी है ।

अर्थ :–

शाब्दिक व्युत्पत्ति के अधार पर देखा जाए तो 'तुलनात्मक' शब्द 'तुलना' शब्द में 'अक्' प्रत्यय लगाकर पूर्ण हुआ है । तुलनात्मक साहित्य के सन्दर्भ में 'तुलना' शब्द 'तुला' से जोड़कर देखा जा सकता है, जिसमें दो पलड़ों में रखे गए भार की तुलना की जाती है, जिससे तौलना शब्द से भी जोड़ा जा सकता है । 'अक्' कृतत्ववाचक कृत प्रत्यय है, जो 'कृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है कार्य अथवा कार्य करना । "तुलना

* इस लेख का कुछ हिस्सा मेरे शोध प्रबंध से लिया गया है।

शब्द तुल्–तोलने धातु से भाववाचक संज्ञा के रूप में निर्मित हुआ है । तुल धातु से ही तुलना (तराजू) शब्द भी बनता है । तुलना शब्द का अर्थ है बराबरी, मुकाबला एवं होड़ । तोलने के अर्थ में भी किसी वस्तु के रूप एवं गुण का परीक्षण ही होता है । अतः तुलना का सामान्य एवं व्यावहारिक अर्थ है किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों का कतिपय समान गुणों के अधार पर पूर्णतया जानने के लिए परीक्षण या तुलना करना या तोलना ।"[1] अंग्रेजी में तुलना शब्द के लिए Compare शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिससे Comparative literature शब्द तुलनात्मक साहित्य के लिए प्रयुक्त होता है । इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य के सन्दर्भ से अभिप्राय दो या अधिक भाषाओं, विधाओं, रचनाकारों आदि के साहित्य का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य कहलाता है । समस्त मानव जीवन के सन्दर्भ में देखा जाए तो तुलना मानव के विकसित मस्तिष्क की ज्ञान पिपासा से निर्मित ज्ञान यात्रा है, जिसका लक्ष्य अन्वेषण एवं आत्मशोधन है । जीवन के प्रत्येक क्षण में तुलना का महत्त्वपूर्ण स्थान है, ठीक इसी प्रकार साहित्य के क्षेत्र में भी 'तुलना' का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

विश्वकोशात्मक ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में तुलना शब्द को विश्लेषित करते हुए लिखा है

"To compare, to match, to represent as similar, to mark the similarities and differences of, to bringing together for the purpose of nothing these. Comparison- Comparable conditions or character the action or an act of nothing similarities and differences. Comparisons may sometimes illustrate but prove nothing."[2] (तुलना, किन्हीं दो वस्तुओं में समान गुणों एवं अंतरों का उद्घाटन या प्रस्तुतीकरण, अथवा इन्हीं विशेषताओं का संयोजन । तुलना कभी कभी आरंभ में संभावनापूर्ण लग सकती है पर अंततः उससे कुछ भी सिध्द न हो सके यह भी होता है ।)

प्रसिध्द विश्वकोशकार वेब्स्टर ने तुलना के अर्थ को स्पष्ट एवं विश्वनीयता के साथ प्रस्तुत किया है, "The placing together of Juxtaposing of two or more items to ascertain, bring into relief or establish their similarities and dissimilarities. Identity (as one feature or set of features with another) between two or more thing or persons. Used chiefly with a negation of something or someone decidedly inferior to another. Comparison is the most general term. In its broadest term it may simply no more than an impartial search for resemblances as well as differences."[3] (दो या दो से अधिक वस्तुओं के समान एवं असमान तत्त्वों को ज्ञान करने के लिए उन्हें साथ रख कर परीक्षित करना । दो वस्तुओं की असमानता की मात्रा का पता लगाने के लिए भी तुलना की जाती है । दो वस्तुओं के साम्य–वैषम्य की निरपेक्ष जांच के लिए तथा निष्कर्ष प्राप्ति के लिए भी तुलना की जाती है ।)

भाषा शब्दकोश में तुलना शब्द का अर्थ दिया है, "समानता या तुल्यता करना, बराबरी करना,तौल होना, समता करना, मिलन कराना ।"[4]

नालंदा विशाल शब्द सागर में तुलना शब्द के संदर्भ में लिखा है, "तराजू पर तोला जाना, तौल या मान के बराबर उतारना, आधार पर इस प्रकार जमकर खड़ा होना या ठहरना कि कोई भाग किसी ओर झुका न रहे, नियमित होना, बाँधना, गाडी के पहिए का ओंगा जाना, उद्यत होना, किसी काम या बात पर तुलना, कोई काम करने के लिए उद्यत होना । दो या दो से अधिक वस्तुओं के गुण–मान आदि के एक–दूसरे से कम अधिक अथवा अच्छी या बुरी होने का विचार । मिलन, तारतम्य, सादृश्य, समानता, उपमा ।"[5]

तुलना शब्द के संदर्भ में वसंत बापट लिखते हैं, "मनुष्य का विचार तुलना के आधार के बिना अस्तित्वहीन होता है, यह बात अधिकांश समय समझ में नहीं आती है ।"[6]

प्रकृति का यह नियम है कि कोई भी वस्तु दूसरे वस्तु के समान नहीं होती । लेकिन वह एक दूसरे से इतनी भी भिन्न नहीं होती की उस में कोई समानता ही न मिले । इन दो वस्तुओं में समानता और असमानता की तलाश हम तुलना के माध्यम से करते हैं ।

परिभाषा :–

तुलना मानव की स्वाभाविक प्रकृति है । ऐसे में यही स्वाभाविक प्रकृति जब साहित्य के अध्ययन में प्रयुक्त की जाती है, तब साहित्य के अध्ययन की तुलनात्मक पद्धति का आरंभ होता है, किन्तु, साहित्य का अध्ययन मानव समाज की चेतना एवं संवेदनाओं का अध्ययन भी होता है । इस प्रक्रिया के तहत देखा जाए तो तुलना का अर्थ सामाजिक जीवन में की जाने वाली तुलना के समान होते हुए भी पद्धति में विशिष्ट हो जाता है । इस विशिष्टता को समझकर सैद्धान्तिकी के रूप में तुलनात्मक साहित्य विकसित करने के लिए उसके स्वरूप निर्धारण के अनेक प्रयास किए गए हैं । चूँकि साहित्य को व्याख्यायित करने का प्रत्येक पीढ़ी अपने ढंग से प्रयास करती है, किन्तु साहित्य के प्रगतिशील–परिवर्तीत स्वरूप के कारण नयी–नयी व्याख्याओं की आवश्यकता महसूस होती है, ठीक उसी प्रकार तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा भी अपने विकासशील स्वरूप के कारण पुरानी व्याख्याओं में व्याप्त नहीं हो पाती है । यही कारण है कि तुलनात्मक साहित्य की व्याख्या कई विद्वानों ने अपने समय में अपने–अपने ढंग से की है । इसी क्रम में प्रत्येक देश–समाज–भाषा समूह एक ही समय में एक ही साहित्यिक चरण में नहीं होता है, इसी कारण योरोप से लेकर अफ्रिका तक और एशिया से लेकर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं तक के विद्वानों ने विभिन्न समयों में तुलनात्मक साहित्य की कई बार एक ही समय में विभिन्न व्याख्याएँ की हैं, जिन्हें आलोचनात्मक ढंग से निम्न रूप में देखा जा सकता है ।

तुलनात्मक साहित्य की दो प्रमुख शाखाओं में से एक फ्रासीसी शाखा के प्रसिद्ध सिद्धान्तकार रेने वेलेक ने तुलनात्मक साहित्य को व्याख्यायित करते हुए लिखा है, "तुलनात्मक साहित्य' साहित्य के समग्र रूप का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है । जिसके मूल में यह भावना निहित रहती है कि साहित्यिक सृजन और आस्वादन की चेतना जातीय एवं राजनैतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एकरस और अखंड होती है ।"[7] सीमाओं से परे जाकर सृजन एवं आस्वादन का अध्ययन रेने वेलेक के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का कार्य है । स्पष्टतः यहाँ वे दो भाषाओं, देशों के साहित्य के अध्ययन में समानताओं और असमानताओं को

रेखांकित करने से परे जाकर सांस्कृतिक स्तर पर एकता के रूप में साहित्य अध्ययन की इस पद्धति के उपयोगिता को देखते हैं । साहित्य का कार्य आप–पर की भावना से ऊपर उठाकर मनुष्य मात्र की भावनाओं का साधारणीकर करना होता है, इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य को मानव संवेदनाओं और संस्कृति के अध्ययन से जोड़कर देखा जा सकता है । संस्कृति के भीतर केवल साहित्य ही नहीं, अपितु अन्य कलाएँ एवं मानव ज्ञान–विज्ञान के कई विषय आते हैं, संभवतः यही कारण है कि तुलनात्मक साहित्य को व्याख्यायित करते हुए हेनरी एच. एच. रेमाक ने इन सब पर भी ध्यान दिया है । उनके अनुसार, "तुलमात्मक साहित्य' एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है । यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान, विज्ञान, धर्मशास्त्र, आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।"[8] रेने वेलेक की परिधि से परे की बात को आगे बढ़ाते हुए ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सम्बन्धों के अध्ययन तक विस्तृत करने का प्रयास हेनरी रेमाक ने किया है । यह तुलनात्मक साहित्य से आगे बढ़ते हुए तुलनात्मक वाङ्मय की परिभाषा देने का प्रयास है । साहित्य से यहाँ रचनात्मक साहित्य से अधिक सम्पूर्ण ज्ञान का अभिप्राय लगता है, किन्तु यह इसे आपसी सम्बन्धों को अध्ययन कहकर यहाँ व्याख्या को सीमित कर दिया गया है, जिससे एक–दूसरे पर पड़े प्रभावों के अध्ययन का बोध होता है । कई बार तुलनात्मक साहित्य में आपसी सम्बन्धों का ही नहीं, भेदों का भी अध्ययन किया जाता है । एक–दूसरे से नितान्त अनभिज्ञ समाज के साहित्य या ज्ञान शाखाओं का भी तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है । यह व्याख्या अत्यन्त व्यापक है, जिसकी तुलना में क्लाइव स्कॉट की व्याख्या अत्यन्त सीमित है । स्कॉट के अनुसार, "तुलनात्मक साहित्य' में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्त्व है ।"[9] निश्चित तौर पर यहाँ तुलनात्मक साहित्य को लिखित साहित्य तक सीमित करके देखा गया है, जो संकुचित दृष्टिकोण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । यह बात इतिहास या विज्ञान आदि ज्ञान शाखाओं के सन्दर्भ में भी पूर्णतः सही नहीं हो सकती, ऐसे में साहित्य के सन्दर्भ में यह कैसे मानी जा सकती है? स्कॉट के ठीक विपरित हेनरी रेमाक की तरह ग्युलिएन ने अपनी व्याख्या प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें उन्होंने इसे वाङ्मय से जोड़कर देखा है । उनके अनुसार, "तुलनात्मक साहित्य अर्थात विशिष्ट प्रवृत्ति या वाङ्मयीन खोज की एक ऐसी शाखा जिसमें अंतरराष्ट्रीय संधान का विशिष्ट अध्ययन है ।"[10] यह एक सरल और सुलझी हुई व्याख्या है, जिसमें अध्येता का दृष्टिकोण निहित है । ध्यान से इसमें सम्पूर्ण अध्ययन को निष्कर्षवादी दृष्टिकोण से देखने का प्रयास दिखाई देता है, जिसमें तय कर लिए गए निष्कर्षों को पाने के लिए अध्ययन किया जाता है । 'विशिष्ट प्रवृत्ति या वाङ्मयीनखोज' से यही अर्थ ध्वनित होता है । इस कमी को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए तो अध्येता के दृष्टिकोण से दी गई यह बेहतरीन व्याख्या हो सकती है । टी. एस. इलियट एवं पासनेट ने भी अध्येता की दृष्टि से तुलनात्मक साहित्य को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है । पासनेट का दृष्टिकोण सैद्धान्तिक पक्ष को लेकर चलता है तो इलियट का व्यावहारिक पक्ष को । शोध और अध्ययन के सन्दर्भ में विचार किया जाए तो इलियट का दृष्टिकोण अधिक व्यापक है, क्योंकि शोध

एक व्यावहारिक कार्य–व्यापार है, किन्तु इसके सैद्धान्तिक पक्ष को भी पूर्णतः अनदेखा नहीं किया जा सकता है । इलियट के अनुसार, "तुलना और विश्लेषण आलोचक के प्रमुख औजार हैं । मूल्यांकनपरक आलोचना की श्रेष्ठता को मापने के लिए तुलनात्मक पद्धति का लाभ उठाती है ।"[11] वहीं पासनेट ने अपनी व्याख्या में कहा है, "साहित्यिक विकास के सामान्य सिध्दांतों का अध्ययन निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग है ।"[12] इन दो व्याख्याओं को समन्वित दृष्टिकोण से देखा जाए तो तुलनात्मक साहित्य के सन्दर्भ में एक पूर्ण दृष्टिकोण का निर्माण हो सकता है, जिसमें व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का समावेश हो सकता है । इस प्रकार से हमें तुलनात्मक साहित्य को व्याख्यायित करते हुए इन दोनों पक्षों पर बराबर ध्यान देना अनिवार्य हो जाता है, एक के बगैर दूसरे पर विचार नहीं किया जा सकता है ।

भारत एक बहुभाषी एवं विभिन्न संस्कृतियों का देश है, ऐसे में साहित्य में व्यापक अन्तर का होना स्वाभाविक है । भारत में जब तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का आरंभ हुआ तो इसे पाश्चात्य के देशों से भिन्न कई दृष्टिकोणों से देखा गया, जिसके माध्यम से यहाँ कई प्रकार की व्याख्याएँ सामने आयीं, जो कई मायनों में पाश्चात्य व्याख्याओं से भिन्नता रखती हैं । अन्तरराष्ट्रीयता के साथ स्थानीयता, संस्कृति के साथ साहित्य की विकास प्रक्रिया, एकता के साथ विभिन्नताओं का अनुसंधान आदि कई विशिष्टताएँ भारतीय विद्वानों द्वारा की गयी व्याखाओं में देखने मिलती हैं । डॉ.नगेन्द्र ने तुलनात्मक साहित्य को व्याख्यायित करते हुए लिखा है, "तुलनात्मक साहित्य' एक प्रकार का अंतःसाहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है–अनेकता में एकता का संधान ।"[13] अर्थात् तुलना के लिए चयनित भाषाओं की अनेक प्रकार की अनेकताओं को स्वीकार करते हुए उनकी एकता का संधान तुलनात्मक साहित्य कहलाता है । स्पष्ट है कि दो भिन्न भाषाओं के साहित्य में विभिन्नताएँ होंगी ही, किन्तु उनके साथ ही उनमें निहित मानवीय चेतना एवं संवेदना की एकता को रेखांकित करना भी तुलनात्मक साहित्य का एक महत् कार्य माना गया है । इसी क्रम में इन्द्रनाथ चौधरी ने कुछ–कुछ पाश्चात्य विद्वानों की तरह इसका व्यापक क्षेत्र मानते हुए उसे वाङ्मय से जोड़ने का प्रयास किया । उनके अनुसार, "तुलनात्मक साहित्य' विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है ।"[14] दूसरे ज्ञान क्षेत्र, अर्थात् साहित्येतर अन्य सभी ज्ञान क्षेत्र किन्तु केवल विभिन्न साहित्य का ही तुलनात्मक अध्ययन नहीं होता, अपितु एक ही भाषा की विभिन्न कृतियों या कृतिकारों का भी अध्ययन तुलनात्मक साहित्य में किया जा सकता है । कई बार तो भिन्न–भिन्न ज्ञान शाखाओं की रचनाओं का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है । जैसे जायसी कृत पद्मावत एवं उसकी ऐतिहासिकता की जाँच करने के लिए कर्नल टॉड़ आदि द्वारा लिखित इतिहास ग्रंथों में तुलना की जाती है । अर्थात यह कहना कि दो भिन्न भाषाओं के साहित्य की तुलना ही तुलनात्मक अध्ययन है, सीमित दृष्टि का परिचायक होगा । इसी कमी को पूरा करने का प्रयास वसंत बापट की व्याख्या में दिखाई देता है । उन्होंने लिखा है, "एक की अपेक्षा अधिक साहित्यों का तुलना की सहायता से किया गया अध्ययन ।"[15] आनन्द पाटिल ने अपनी व्याख्या को अत्यन्त व्यापक बनाने का प्रयास किया है ।

उनके अनुसार, "तुलनात्मक साहित्य अर्थात अध्येयता के समकालीन संस्कृति सापेक्ष स्वत्व के क्षेत्रीय रेखाओं को नियोजनबद्ध पद्धति से बनाकर सांस्कृतिक राष्ट्रीयता और भाषाओं की सीमाओं को तोड़कर साहित्य और अन्य कलाओं, साहित्य एवं विज्ञान, साहित्य और नयी–पूराने ज्ञान क्षेत्र तथा मानवीय अभिव्यक्ति की पद्धतियों में परस्पर मिश्र सम्बन्धों के अनेक ज्ञान शाखाओं के दृष्टिकोणों का प्रयोग करते हुए विभिन्न स्तरों पर की जानेवाली समीक्षा है ।"[16] इस व्याख्या में एक प्रकार से तुलनात्मक साहित्य को व्याख्यायित करने के अतिरिक्त तुलनात्मक साहित्य के अध्येता के गुणों को बताने का भी प्रयास किया गया है । सर्वप्रथम तुलनात्मक साहित्य के अध्येता को अपनी सांस्कृतिक सीमाओं से परे जाने की आवश्यता होती है, जिसमें वह नियोजनबद्ध पद्धति से तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास करता है । तत्पश्चात् यह अध्ययन केवल साहित्य पर आश्रित न होने के कारण अध्येयता को विषय से सम्बन्धित अन्य ज्ञान शाखाओं के ज्ञान का भी आधार लेना होता है, जिसकी जानकारी उसे होनी चाहिए । इसके बाद इस व्याख्या में इसे केवल अध्ययन मात्र मानने से बचते हुए उसे समीक्षा माना गया है । इसमें कृतियों के अध्ययन को तो जोड़ा गया है, किन्तु कृतियों के तत्कालीन एवं समकालीन समाज को भी जोड़कर देखने को कहा जाता तो यह व्याख्या अधिक व्यापक होती । इस प्रकार उपरोद्धृत अन्य व्याख्याओं की तुलना में यह व्याख्या व्यापकता लिए हुयी है ।

उपरोक्त तुलनात्मक साहित्य की परिभाषाओं को देखने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है, कि तुलनात्मक साहित्य देश–काल की सीमाओं से मुक्त विश्व साहित्य की अवधारणा को प्रबल बनाने का कार्य करता है । तुलनात्मक साहित्य राजनीतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त है । वह सिर्फ साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है, किन्तु वह स्थानीयता को अनदेखा नहीं करता है । जिसमें कला, इतिहास, समाज–विज्ञान, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में क्या संबंध है ? इस का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है । तुलनात्मक साहित्य में भिन्न साहित्यिक भाषाओं के साहित्य का अध्ययन कर किस काल में उस भिन्न भाषिक साहित्य की प्रवृत्तियों में किस प्रकार का बदलाव एक–दूसरे के प्रभाव से आ रहा था, यह भी स्पष्ट होता है ।

स्वरूप :–

तुलनात्मक साहित्य का अर्थ न तो केवल वैश्विक होकर रह जाना है और न ही स्थानीयता को हिकारत की दृष्टि से देखना है, अपितु राष्ट्रीयता, अन्तरराष्ट्रीयता एवं स्थानीयता के बीच की कड़ी के रूप में तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप स्थित है । यह न तो साहित्य अध्ययन की कई विधियों के बे अनुपात मिश्रण से बना है और न यह सिद्धान्त विहीन पद्धति है । यह न तो सिद्धान्तरहित व्यावहारिक आलोचना है और न व्यवहार रहित सैद्धान्तिक आलोचना, अपितु विश्व एवं राष्ट्रीय स्तर पर इसके सैद्धान्तिकी का विकास हो रहा है और कुछ अर्थों में हो चुका है । इसकी सैद्धान्तिकी के सन्दर्भ में भले ही कई मतभेद हों, किन्तु उनमें आन्तरिक एकता देखने को मिलती है । यह किसी साहित्य को पिछड़ा, अविकसित, भ्रष्ट आदि पूर्वग्रह युक्त दृष्टि से देखने का प्रतिवाद करते हुए अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत करने की पद्धति है । तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन क्षेत्र में

केवल लिखित अथवा प्रकाशित साहित्य ही नहीं, अपितु मौखिक साहित्य भी आता है । वह मौखिक लोक साहित्य को उतना ही साहित्य मानता है, जितना कि लिखित–प्रकाशित साहित्य को ।

तुलनात्मक साहित्य के स्वरूप को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण सामने आए, जिन्हें सुचारू विचार शाखा के रूप में अमरिकी शाखा, पेरिस–जर्मन शाखा और रूसी शाखा कहा जाता है । तुलनात्मक साहित्य की यह तीन शाखाएँ अपने विचारों के कारण वैश्विक स्तर पर अपनी विचारधारा के रूप में सामने आकर तुलनात्मक साहित्य की वैचारिकी को पुष्ट करने का कार्य किया, इनके द्वारा स्थापित मान्यताओं का सार यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है । इनमें सर्वप्रथम तुलनात्मक साहित्य की अमरिकी शाखा आती है । दूसरे विश्वयुद्ध के बाद इसका उदय हुआ, जिसमें जर्मनी से गए हुए विद्वान सम्मिलित थे । इनकी मान्यताओं के अनुसार तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र ज्ञान शाखा है, जिसका कार्य अन्य ज्ञान शाखाओं से साहित्य के संबंधों स्वीकार करना एवं दर्शाना है । इस प्रक्रिया को वे साहित्यालोचना का प्रमुख अंग मानते हुए इसके अन्तर्गत साहित्य की सादृश्यता, शैली पक्ष, विधा की विकास प्रक्रिया, साहित्य के उद्देश्य, साहित्यिक आन्दोलन तथा उनकी परम्परा पर विचार करते हैं । इसे वे तुलनात्मक आलोचना से भी जोड़कर देखते हैं, जिसमें साहित्य की आलोचना को एक महत्त्वपूर्ण अंग मात्र मानते हैं । तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन को वे साहित्येतिहास की सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया का अंग मानते हुए अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करने के पक्ष में हैं, किन्तु वे आलोचना की भाँति निर्णयात्मक आलोचना के सख़्त विरोधी हैं । इसी प्रकार अमरिकी शाखा सौन्दर्यशास्त्र को दर्शन का विषय मानते हुए उसका तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में उपयोग करने से परहेज़ करती है, यह इसकी विशेषता और सीमा दोनों हैं । वे अन्य ज्ञान शाखाओं से सहायता लेते समय उसमें निहित तथ्यात्मकता को भी ध्यान में रखते हैं, किन्तु केवल तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए अन्य ज्ञान शाखाओं के उपयोग के वे पक्ष में नहीं है, अपितु रचनात्मक साहित्य के अध्ययन में सामाजिक दृष्टि के अधिकाधिक उपयोग के लिए अन्य ज्ञान शाखाओं से सहायता लेने का वे समर्थन करते हैं । सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों को समझने के लिए अन्य ज्ञान शाखाओं का उपयोग करना इस शाखा का मुख्य उद्देश्य है, जिससे तुलनात्मक साहित्य को अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हुए उसे सार्थकता प्रदान की जा सके और वह एक स्वतंत्र ज्ञान शाखा के रूप में पूर्णतः स्थापित हो तथा उसकी समुचित सैद्धान्तिकी का निर्माण हो सके ।

जर्मन–फ्रासीसी शाखा अमरिकी शाखा की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक थी, क्योंकि इसमें सिद्धान्त से अधिक व्यावहारिक पक्ष पर बल देते हुए तुलनात्मक साहित्य को विविध साहित्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन माना गया, अथवा अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक सम्बन्धों का इतिहास माना गया, जो अन्ततोगत्वा विश्व साहित्य का इतिहास लिखने की प्रक्रिया का अंग बना । यह अधिक व्यापक दृष्टिकोण है । जर्मन–फ्रासीसी शाखा तुलनात्मक साहित्य को पारम्पारिक ढंग से स्थानान्तरण की प्रणाली, अभिग्रहण, सफलता तथा प्रभाव और आधारभूत सूत्रों की खोज करता है । इसके साथ ही वह एक साहित्यिक वस्तु और रूप एक देश या भाषा से दूसरे देश या भाषा में कैसे यात्रा करते हैं, इसकी खोजबीन करने पर विश्वास करता है । यह प्रक्रिया इसे न

केवल दो भाषाओं के साहित्य तक सीमित करती है, अपितु उसे विश्व साहित्यिक पटल पर अध्ययन करने के लिए प्रेरित करती है । उदाहरणार्थ यदि हायकू के उद्भव का एवं उसके फ्रान्स तक के प्रवास को जानना हो तो सबसे पहले उसे जपान के लोक भाषा काव्य से लेकर उसके चीन, इंडोनेशिया, भारतीय उपमहाद्वीप से होते हुए योरोप तक पहुँचने का अध्ययन प्रस्तुत करना होगा । इसके साथ ही इस प्रवास–प्रक्रिया में उसकी मूल विषय–वस्तु एवं रूप में होनेवाले परिवर्तनों को भी रेखांकित करना पड़ेगा । इस प्रकार विश्व साहित्य में हायकू के प्रचार एवं प्रसार की प्रणाली को समझाने का प्रयास करने में यह शाखा विश्वास करती है । कुल मिलाकर तुलानात्मक साहित्य की सभी शाखाओं के इतिहास पर ध्यान दिया जाए तो जर्मन–फ्रासीसी शाखा में सबसे अधिक विवाद रहे हैं । आरंभिक दौर में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में आलोचना को बगल कर केवल दस्तावेज़ी विश्लेषण पर बल दिया जाता था, जिसमें तथ्यों पर अधिक ध्यान देने पर जोर था । बाद के समय में इस प्रवृत्ति को दूर कर साम्य या वैषम्यमूलक तुलना तथा प्रभाव सूत्रों के अध्ययन का उपयोग करते हुए नये प्रतिमानों का विकास करने का प्रयास किया । इस अध्ययन में उन्होंने सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिमानों को भी समाविष्ट किया । संश्लेषणात्मक अध्ययन को भी इस शाखा में काफी विवाद के बाद स्वीकार किया गया, जो बाद में इस शाखा की अद्वितीय विशेषता के रूप में उभरकर आयी, जिसका विकास द्वि–आधारी अध्ययन के रूप में किया गया । द्वि–आधारी भारत जैसे बहुभाषिक देश के लिए अत्यन्त उपयोगी पद्धति है । जर्मन–फ्रांसीसी शाखा साहित्य तथा ज्ञान की दूसरी शाखाओं के सम्बन्धों को कोई महत्व नहीं देती, किन्तु द्वि–आधारी पद्धति में साहित्य और साहित्य के सम्बन्धों पर अधिक बल दिया जाता है, जो इस पद्धति को स्वतंत्र ज्ञान शाखा के रूप में स्थापित करने का ही एक प्रयास है । उनके अनुसार तुलनात्मक साहित्य काव्यशास्त्रीय, कलात्मक, सौन्दर्यशास्त्रीय अनुशासन नहीं, वरन् ऐतिहासिक अनुशासन है, इस कारण इसे अधिक वैज्ञानिक दृष्टि से युक्त अध्ययन पद्धति कहा जाता है, किन्तु साहित्य में वैज्ञानिकता के दावे स्वयं एक कल्पना होते हैं । यदि साहित्य का कलात्मक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय प्रभाव न रह जाए या उसका अध्ययन न किया जाए तो, साहित्य और समाज विज्ञानों में शायद ही कोई अन्तर बच जाए । इस प्रकार अपनी विशेषताओं–कमियों के साथ जर्मन–फ्रासीसी शाखा ने तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अपना योगदान दिया । इसकी कई मान्यताओं ने विश्व स्तर पर तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक पक्ष को स्थापित किया, विशेष तौर पर प्रतिमानों एवं शब्दावली के निर्माण सम्बन्धी विवेचन के क्रम में इसका योगदान उल्लेखनीय है ।

तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में दृष्टि एवं पद्धति की भेद के कारण रूसी शाखा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है । इस स्कूल (शाखा) के विद्वानों के लिए यह तुलनात्मक साहित्य एक सार्विक साहित्यिक संवृत्ति (Phenomena) का सार संग्रह है, जो विभिन्न देशों के जनसमूह के सामाजिक जीवन के ऐतिहासिक विकास पर निर्भर है । दूसरे शब्दों में इनके अनुसार "तुलनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत साहित्यिक विधाओं, आन्दोलनों, प्रकारों तथा सार्विक साहित्यिक संवृत्ति का अध्ययन होता है ।"[17] इस शाखा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल पुस्तकीय आधार के बजाए वास्तविक सामाजिक क्षेत्रीय कार्य की मदत लेने की भी सलाह देती

है । अन्य ज्ञान शाखाओं से यह प्रायः वही सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करती है, जो अमरिकी शाखा में स्थापित करने के लिए कहा गया है, किन्तु साथ ही यह ऐतिहासिक दृष्टि एवं व्यावहारिक क्षेत्र कार्य पर भी अतिरिक्त बल देती है । इस कारण यह तुलनात्मक साहित्य का अधिक व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत करती है ।

तुलनात्मक साहित्य की इन विभिन्न शाखाओं के दृष्टिकोण से तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप कुछ स्पष्ट हो जाता है, जिनमें उसकी विभिन्न विशेषताओं को रेखांकित किया गया है । तुलानात्मक साहित्य में प्रतिमानों और सैद्धान्तिक मान्यताओं की महत् भूमिका होती है । इसमें अध्ययन के लिए चयनित साहित्यिक भाषा में प्रचलित साहित्यिक प्रतिमानों में से या उनसे इतर भाषा–साहित्य के प्रतिमानों का उपयोग किया जा सकता है, किन्तु इस सन्दर्भ में निश्चित तौर पर सिद्धान्त तय नहीं किए जा सकते हैं । प्रतिमानों का सम्बन्ध आलोचना से होता है, जिसका विकास सभी भाषा, देश के साहित्य में समान रूप से नहीं होता है । यदि भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि और युनानी नाट्यशास्त्र की दृष्टि के भेद को समझे बगैर प्रतिमानों का उपयोग तुलनात्मक साहित्य में किया जाए तो, विपरित निष्कर्ष निकल सकते हैं । इसलिए कहा जाता है कि तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप मूलतः निष्कर्षवादी या किसी एक भाषा–राष्ट्र के साहित्य को श्रेष्ठ या बेहतर सिद्ध करना नहीं होता है और यह अन्तर प्रतिमानों के बदलने मात्र से आ सकता है ।

एक समय तक तुलनात्मक साहित्य को दो कृतियों या भाषा के साहित्य में निहित साम्य–वैषम्य को दिखानेवाला अध्ययन मात्र माना जाता था, जो संकुचित दृष्टि का परिचायक है । सैद्धान्तिक स्तर पर विचार किया जाए तो तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का सम्बन्ध आन्तरिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करना भी होता है । आवश्यक नहीं कि यह दो भाषाओं के साहित्य को ही लेकर की जाए, एक ही भाषा की दो कृतियों या दो से अधिक भाषा की कृतियों के सन्दर्भ भी इसमें आ सकते हैं । इसकी परिधि तय कर पाना असंभव कार्य है । यह तो अध्येता और उसकी ज्ञान कक्षाओं पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार अधिक से अधिक व्यापक तौर पर तुलना कर अपने अध्ययन को अधिकाधिक विशिष्ट बनाए, व्यापकता प्रदान करे ।

तुलनात्मक अध्ययन एवं आलोचना के सम्बन्धों के स्वरूप को लेकर भी कई मत–मतान्तर हैं । कई लोग भ्रमवश तुलनात्मक अध्ययन को तुलनात्मक आलोचना मान लेते हैं । तुलनात्मक आलोचना में निष्कर्ष दिया जा सकता है, किन्तु तुलनात्मक साहित्य अध्ययन अनिवार्यतः निष्कर्षवादी नहीं होना चाहिए । तुलनात्मक आलोचना प्रायः पूर्वाग्रहों से प्रेरित होकर किसी विशिष्ट रचना अथवा रचनाकार के पक्ष में अपना मत प्रस्तुत करने या किसी विशिष्ट रचना या रचनाकार को किसी अन्य रचनाकार से श्रेष्ठ दिखाने के लिए की जाती है । जैसे हिन्दी में देव और बिहारी सम्बन्धी तुलनात्मक आलोचना का आरंभ ही इस मत को पुष्ट करता है । कबीर और तुलसीदास के बीच की गई तुलनात्मक आलोचना भी इसी मत से प्रेरित है । तुलानात्मक साहित्य में ऐसी अपेक्षा नहीं होती है । यहाँ दोनों के स्वरूप में मूलभूत अन्तर देखने को मिलता है । तुलनात्मक साहित्य एक साहित्यकार को राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने का कार्य भी करता है । दूसरे जन–मानस तक

उनके परिचित कवि के माध्यम से समीप ले जाने का कार्य करता है । इस रूप में यह साहित्य की सामाजिक भूमिका का विस्तार करता है, इसे अन्य अपरिचित समाज तक पहुँचाता है ।

तुलनात्मक साहित्य के कई अंग हैं, जिसमें कालक्रमिक एवं एककालिक दोनों प्रकार का अध्ययन किया जाता है । "तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के अध्ययन को मूल रूप से ऐतिहासिक अथवा कालक्रमिक (Diachronic) न मानकर एककालिक (Synchronic) अथवा कलात्मक दृष्टि से एक स्वतंत्र सम्पूर्ण प्रणाली ही माना जाता है और तभी तुलनात्मकतावादी आलोचक तुलनात्मक साहित्य को जाति, परिवेश तथा काल के उत्पाद के स्थान पर एक संस्था के रूप में प्रकाशित कर पाता है । इसका तात्पर्य यह नहीं कि तुलनात्मक साहित्य साहित्येत्तर आयामों यानी साहित्य के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक पक्षों को नकारता है वरन् इसके लिए विशुद्ध कलागत आयामों का ही महत्व अधिक है ।"[18] इस प्रकार से तुलनात्मक साहित्य कई दृष्टियों से देखा जाता है । इसमें प्रतिमानों, आलोचना को लेकर इसके सम्बन्धों, साहित्य सम्बन्धी मान्यताओं, इतिहास, अन्य ज्ञान शाखाओं से सम्बन्ध आदि कई बातों में अनिश्चित नियम दिखाई देते हैं ।

जिस प्रकार तुलानात्मक साहित्य में कई दृष्टियाँ मिलकर उसके स्वरूप का निर्माण करती हैं, उसी प्रकार कई पद्धतियाँ भी इसके स्वरूप निर्माण में सहायक है । दृष्टि एवं पद्धतियों को पूर्णतः अलगाया नहीं जा सकता है । कुछ पद्धतियाँ हैं : एक ही भाषा की दो भिन्न समयों की रचनाओं की तुलना, एक ही भाषा की एक ही समय की रचनाओं की तुलना, दो भिन्न भाषाओं की रचनाओं की तुलना, दो भिन्न भाषाओं की दो भिन्न समयों की रचनाओं की तुलना, दो भिन्न भाषाओं के दो भिन्न रचनाकारों की सम्पूर्ण रचनाओं की तुलना, दो भिन्न विधाओं की तुलना, किसी भाषा के साहित्यिक रूपों की अन्य भाषा के साहित्यिक रूपों की तुलना, दो भिन्न भाषाओं के साहित्यिक आन्दोलनों की तुलना, दो भिन्न भाषाओं के सम्पूर्ण साहित्यिक युग की तुलना, दो भिन्न भाषाओं के साहित्य सिद्धान्तों की तुलना, साहित्य में प्रभावों की तुलना आदि कई पद्धतियों से तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है ।

इस प्रकार से तुलनात्मक साहित्य अध्ययन पद्धति अपने स्वरूप में अत्यन्त व्यापक होने के साथ ही विकासशील पद्धति भी है । इसके स्वरूप में युगानुरूप व्यापकता आती गई और आ रही है । इसके सम्बन्ध में मुख्यधारा की शाखाओं के अतिरिक्त अन्य कई विचार हो सकते हैं, जो चर्चा का विषय न रहे हो, किन्तु महत्त्वपूर्ण हैं । वर्तमान समय में समाज विज्ञान आदि का आधार लेने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, जिसमें रचनाओं की ऐतिहासिकता, सामाजिक सम्बद्धता आदि को अधिक सफलतापूर्वक व्याख्यायित करने में सहायता मिल रही है । इतिहास की सहायता से रचनाओं की प्रामाणिकता की जाँच की जाती है, जिसमें उस रचना की समकालीन कई रचनाओं से उसके तथ्य ही नहीं, संवेदनाओं–मान्यताओं, विचारधारा–भावधारा की भी तुलना की जाती है । संक्षेप में कहा जाए तो यह व्यापक पद्धति है तथा विकसनशील है, जिस कारण इसके स्वरूप के सन्दर्भ में अन्तिम रूप से कहना गलत होगा ।

संदर्भ

[1] डॉ. जैन रवीद्र कुमार, साहित्यिक अनुसंधान के आयाम. पृ. 45

[2] The Oxford English Dictionary, Second Edition, Volume-3rd.page no.592

[3] डॉ. जैन रवीद्र कुमार, साहित्यिक अनुसंधान के आयाम. पृ. 46-47

[4] सं. डॉ. रामशरण शुक्ल 'रसाल', भाषा शब्दकोश. पृ. 746

[5] सं. श्री. नवलजी, नालंदा शब्द सागर. पृ. 530

[6] बापट वसंत, तौलनिक साहित्याभ्यास. पृ. 15.- मानसाचे विचार तुलनेच्या आधाराशिवाय अस्तित्वातच येऊ शकत नाही हे पुष्कळ वेळा आपल्या लक्ष्यात येत नाहीं.

[7] सं. भ. ह. राजूरकर, राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ, पृ. 35

[8] डॉ. चौधरी इन्द्रनाथ, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, पृ. 9

[9] सं. भ. ह. राजूरकर, राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ, पृ. 35

[10] बापट वसंत, तौलनिक साहित्याभ्यास, पृ.35

[11] सं. भ. ह. राजूरकर, राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ, पृ. 35

[12] सं. भ. ह. राजूरकर, राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ, पृ. 35

[13] सं. भ. ह. राजूरकर, राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ, पृ. 35

[14] डॉ. चौधरी इन्द्रनाथ, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, पृ.5

[15] सं. भ. ह. राजूरकर, राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ, पृ. 35

[16] डॉ.आनंद पाटिल, तौलनिक साहित्य: नवे सिद्धांत आणि उपयोजन, पृ.43-44

[17] सं.राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययन: स्वरूप एवं समस्याएँ, पृ.37-38

[18] इन्द्रनाथ चौधुरी-तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, पृ.14-15

सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
सेन्ट जोसेफ विश्वविद्यालय, बेंगलुरु.
फोन नं. 8050694080, ईमेलः pathanhasan@sju.edu.in